MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - II

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1 (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) कृति पूर्ण कीजिए। **2**

(i)

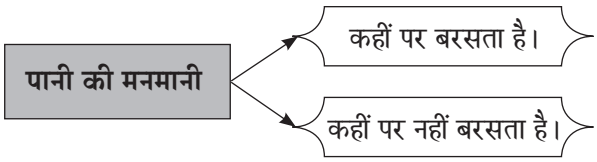

(ii)

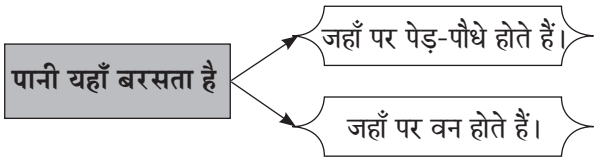

(2) (i) **वचन बदलिए।** **1**

(I) नदी - नदियाँ (II) गली - गलियाँ

(ii) **निम्नलिखित शब्दों में से प्रत्यय छाँटकर लिखिए।** **1**

(I) **प्रत्यय** : वाली (II) **प्रत्यय** : दार

(3) जल के बिना जीवन असंभव है। प्राकृतिक जल स्त्रोतों को स्वच्छ रखना हमारा कर्तव्य है। हमें तालाब एवं नदी के पानी में पशुओं को नहलाना नहीं चाहिए। तालाब या नदी में हमें कपड़े या बर्तन नहीं धोने चाहिए। तालाब व नदी में कूड़ा-कचरा नहीं फेंकना चाहिए। कल-कारखानों का दूषित और जहरीला पानी नदी में डालने पर रोक लगानी चाहिए। लोगों में जल-प्रदूषण के खतरे के प्रति जागरुकता निर्माण करनी चाहिए। जल प्रदूषण को रोकने के लिए प्रदूषण बोर्ड को सख्त कानून बनाने चाहिए। इस प्रकार सभी को स्वेच्छा से इस अभियान के लिए आगे आना चाहिए। **2**

उ. 1 (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) संजाल पूर्ण कीजिए। **2**

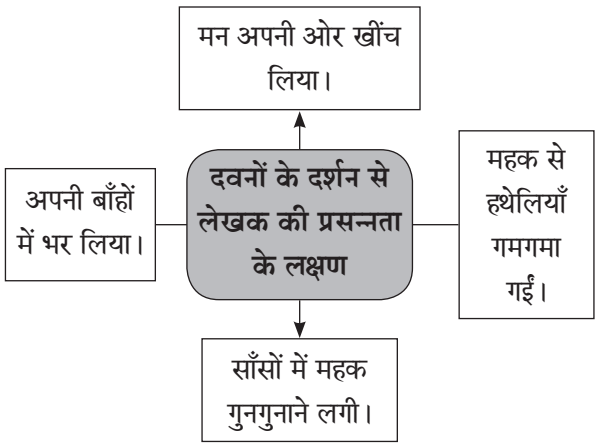

(2) (i) **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ गद्यांश में ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(I) अवकाश प्राप्त - निवृत्त (II) हरियाली - हरीतिमा

(ii) **अनेक शब्दों के लिए एक शब्द लिखिए।** **1**

(I) प्रकृतिस्थ (II) प्रभाती

(3) जीवन-रूपी यात्रा में सीखने के लिए कोई किताब साथ नहीं होती। व्यक्ति अपने अनुभवों से ही सीखता है। व्यक्ति जीवन में कार्य करते समय कई गलतियाँ करता रहता है। उन गलतियों से उसका अनुभव समृद्ध हो जाता है। वह फिर से उन गलतियों को नहीं दोहराता। वह अपनी गलतियों से बहुत सारी बातें सीखता है और स्वयं के अनुभव को समृद्ध बनाता है। अनुभव सोने के समान होता है। जिस प्रकार सोना तप-तप कर तैयार हो जाता है; उसी प्रकार अनुभव दिन-रात की मेहनत एवं लगन से प्राप्त किया जाता है। व्यक्ति के जीवन में आने वाले अच्छे-बुरे अनुभव उसके मार्गदर्शक बनते हैं। अनुभव से मिलने वाला ज्ञान व्यक्ति को सफलता के शिखर पर पहुँचा देता है। अनुभवहीन ज्ञान जीवन की सच्चाई के सामने टिक नहीं पाते। अत: अनुभव ही सबसे बड़ा शिक्षक होता है। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2 **(अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**

(1) **कृति पूर्ण कीजिए।** **2**

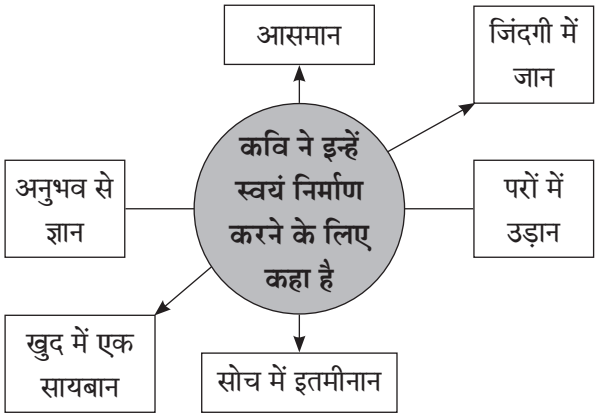

(2) **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए।** **1**

(i) आसमान - अंबर (ii) पर - पंख

(3) प्रकृति से प्राप्त संसाधनों को प्राकृतिक संसाधन कहा जाता है। हवा, पानी, खनिज, लकड़ी, मिट्टी, तेल, वनस्पति, जीवाश्म ईंधन व ऊर्जा आदि प्राकृतिक संसाधनों के उदाहरण हैं। हमें प्राकृतिक का इस्तेमाल सोच-समझकर ही करना चाहिए। उन्हें व्यर्थ में बरबाद करने से आगे चलकर मनुष्य जीवन ही खतरे में पड़ सकता है। सभ्यता के इस युग में लोगों ने अपनी आँखे बंद करके प्राकृतिक संसाधनों का अमर्यादित दोहन करना शुरू कर दिया है। पेड़ों की अंधाधुंध कटाई हो रही है। पेड़ों की कटाई के विपरीत प्रभाव के कारण प्रदूषण एवं वर्षा की कमी हो रही है। इसलिए जीवन को संभव बनाना है, तो हमें धरती पर उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग करना होगा। **2**

उ. 2. **(आ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**

(1) **समझकर लिखिए।**

(i) **1**

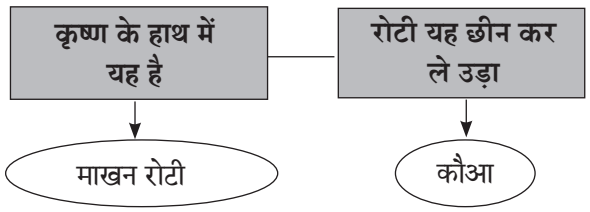

(ii)

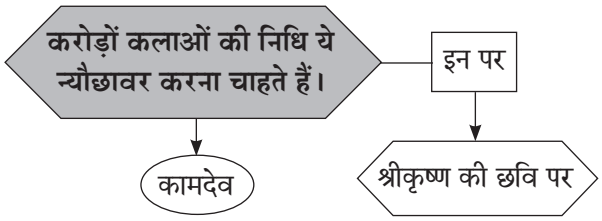

1

(2) **निम्नलिखित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखिए।** 1

(i) स्त्री के सिर के गूँथे हुए बाल, पर्वत शिखर

(ii) संपत्ति, आश्रयस्थान

(3) कवि रसखान कृष्ण के असाधारण भक्त थे। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अपनी भक्ति को कृष्ण के प्रति समर्पित कर दिया था। भगवान कृष्ण की लीलाओं से सभी परिचित है। उन्होंने गोकुल में जन्म लिया था और वे जन्म से ही अपने भक्तों का उद्धार करते रहे। अत: उनकी बालसुलभ क्रियाएँ एवं उनकी बचपन की लीलाओं का मनोहारी वर्णन कर सभी पाठकों को कृष्ण भक्ति में एकाकार करना कृष्ण प्रेमी कवियों का प्रमुख लक्ष्य रहा और साथ ही अपने इष्ट का वर्णन करते हुए उसके साथ एकाकार होना यह भी प्रमुख उद्देश्य रहा। कवि रसखान इससे अपवाद नहीं हैं। उन्होंने बड़ी ही तन्मयता से कृष्ण के बालरूप का मनोहारी वर्णन करके अपनी भक्ति को कृष्ण के चरणों में समर्पित कर दिया है। 2

विभाग 3 - व्याकरण विभाग

उ. 3 **सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**

(1) **निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** 1

(i) विद्यापीठ (ii) खूबसूरत

(2) **निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** 1

(i) **के अलावा** : मुझे इसके अलावा और कुछ नहीं अच्छा लगता।

(3) (i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** 1

मानो वे किसी हड़बड़ी में चलते-चलते कपड़े पहनकर आए।

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** 1

सामान्य वर्तमानकाल

(4) (i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** 1

यादों में जाग उठना - पुरानी यादें ताजा हो जाना।

वाक्य - डॉ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम स्वर्ग सिधारे हैं; परंतु वे आज भी हमारी **यादों में जाग उठते हैं।**

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** 1

अचानक पिता जी द्वारा पर्यटन पर जाने का निर्णय सुनकर बच्चे **फूले न समाए।**

(5) (i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** 1

सदा + एव - सदैव = स्वर संधि

(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** 1

दुस्साहस - दु: + साहस = विसर्ग संधि

(6) (i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** **1**

सरल वाक्य

(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** **1**

विधानार्थक वाक्य

विभाग 4 - रचना विभाग

उ. 4 **(अ)** **4**

(i) दिनांक : १५ जनवरी २०१७

प्रति,

सेवा में,

श्री थानाध्यक्षजी,

मालेगाँव।

विषय : अराजक तत्वों से सुरक्षा हेतु प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

शहर में कानून और व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी आप पर है। हमें पूरा विश्वास है कि यह जिम्मेदारी निभाने में आपका पुलिस विभाग भरसक प्रयत्न करता ही होगा। फिर भी, पिछले कुछ दिनों से अराजक तत्वों की हरकतें बढ़ रही हैं। इस ओर आपका ध्यान खींचना मैं अपना नागरिक कर्तव्य समझती हूँ।

कुछ दिनों से औरतों के गले से चैन आदि खींचने और इन्हें अपमानित करने की वारदातों में वृद्धि हुई है। यह विशेष चिंता की बात है। औरतों की मदद करने के लिए आगे आनेवाले शरीफ आदमियों को गुंडों ने बेरहमी से पीटा है। यह तो और भी शर्मनाक बात है।

किसी-न-किसी बात को लेकर दो दलों में टकराव हो जाती है। फिर दुकानों की लुटपाट शुरू हो जाती है, जिसके बारे में स्वयं आप मुझसे अधिक जानते हैं।

आपसे विनम्र निवेदन है कि नागरिकों के कष्ट की ओर ध्यान देते हुए पुलिस-चौकियाँ बढ़ाई जाएँ और सिपाहियों को मुस्तैद रहने का हुक्म दिया जाए। इस दिशा में आप और भी आवश्यक कदम उठाने की कृपा करें। शीघ्र राहत मिलेगी तो जनता आपकी कृतज्ञ रहेगी।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

धन्यवाद!

भवदीया,

हसीना सिद्दीकी

सिद्दीकी मंजिल,

मालेगाँव - ४२३ २०३।

ई-मेल आइडी - haseenas942@gmail.com

अथवा

(ii) दिनांक - मई २५, २०१८ **4**

प्रिय अथर्व

स्नेह!

आशा है आप स्वस्थ होंगे। मैं भी यहाँ कुशल हूँ। मित्र! इस बार मेरा जन्म-दिन धूमधाम से मनाने की तैयारियाँ है। अत: तुम २० जून की तिथि मेरे लिए सुरक्षित कर लो। यहाँ तुम १९ जून की रात तक पहुँच जाओ, ताकि सभी कार्यक्रमों में शामिल हो सको। कार्यक्रम इस प्रकार है -

प्रात: ७ बजे हवन-यज्ञ होगा। हवन के बाद सत्संग प्रवचन होंगे। इसके बाद मित्र-मंडली रंगारंग कार्यक्रम पेश करेगी। इसके बाद प्रीतिभोज होगा।

माताजी व पिताजी को चरण-स्पर्श। १९ जून को आना न भूलना।

तुम्हारा,

तुषार

नाम : तुषार कुमार

पता : ६३७-ए, सेक्टर-१२, इस्पात नगर, बोकारो।

ई-मेल आईडी : tushar123@gmail.com

उ. 4 **(आ)**

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

'स्वास्थ्य ही संपदा है।'

श्रीरामपुर गाँव में धनसुखलाल नाम का एक धनी व्यक्ति रहता था। वह बहुत ही कंजूस प्रवृत्ति का था। रईस होने के बावजूद भी वह स्वयं पर कभी भी पैसे खर्च नहीं करता था। वह दिन में सिर्फ एक वक्त का भोजन करता था। इतना ही नहीं वह अपने परिवार वालों पर भी धन खर्च नहीं करता था। उसकी कंजूसी के कारण उसका परिवार प्रतिदिन भूखे पेट ही सोता था।

एक दिन धनसुखलाल बीमार पड़ गया। भरपेट खाना न खाने के कारण उसका शरीर कमजोर हो गया था। उसकी शक्ति कम हो गई थी। परिवार के लोग उसे डॉक्टर के पास ले जाना चाहते थे। लेकिन डॉक्टर के पास जाकर काफी रूपया खर्च हो जाएगा। इसलिए उसने घरेलू औषधियाँ लेना प्रारंभ कर दिया। आहिस्ता-आहिस्ता उसका शरीर अत्यधिक अस्वस्थ और कमजोर हो गया। यहाँ तक कि अब उठकर चलने की शक्ति भी उसमें शेष नहीं थी। फिर भी वह डॉक्टर के पास जाने के लिए राजी नहीं हुआ।

उसी शाम गाँव में एक महात्मा आए। उन्होंने धनसुखलाल के बारे में सुना और वे स्वयं उसे मिलने गए। महात्मा को देखकर धनसुखलाल ने सोचा कि यह महात्मा उसका इलाज कर देंगे। उसने आशा से महात्मा को प्रणाम किया। महात्मा ने उसे स्पष्ट कहा - 'मूर्ख धनसुखलाल, मैं तुम्हारा भविष्य जानता हूँ। यदि तुम अभी डॉक्टर के पास नहीं जाओगे; तो कल सुबह तक तुम्हारी मृत्यु निश्चित है।' महात्मा की भविष्यवाणी सुनकर धनसुखलाल के हाथ-पाँव काँपने लगे और महात्मा को प्रणाम करके वह तुरंत अपने परिवार वालों के साथ डॉक्टर के पास चला गया। डॉक्टर ने पूरी निष्ठा से उसका इलाज किया। कुछ दिनों के बाद वह ठीक हो गया। अब उसकी समझ में आ गया था कि 'स्वास्थ्य ही संपदा होती है।'

सीख : स्वास्थ्य से बढ़कर दूसरी कोई संपत्ति नहीं होती। व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का सदैव ध्यान रखना चाहिए।

अथवा

(ii) (I) जापान के बारे में स्वामी रामतीर्थ ने क्या कहा? **4**

(II) स्वामी रामतीर्थ की बात सुनकर जापानी युवक फल क्यों ले आया?

(III) जापानी युवक ने स्वामी रामतीर्थ से फलों के दाम क्यों नहीं लिए?

(IV) युवक ने स्वामी रामतीर्थ से क्या प्रार्थना की?

उ. 5	(अ) विज्ञापन लेखन :	4

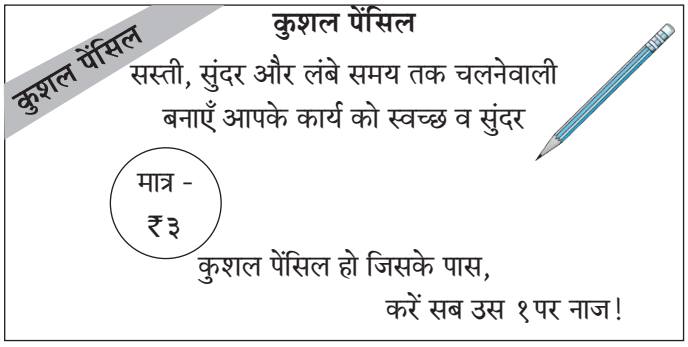

उ. 5 (आ) **निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** 6

(i) **मेरा प्रिय त्योहार**

हमारा भारत देश त्योहारों का देश है। भारत में दीपावली, होली, नवरात्रि, गणेशचतुर्थी आदि तरह-तरह के त्योहार मनाए जाते हैं। प्रत्येक त्योहार की अपनी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विशेषता होती है। इस प्रकार प्रत्येक त्योहार का अपना महत्त्व होता है। सभी को त्योहार अच्छे लगते हैं। मैं भी इसका अपवाद नहीं हूँ।

मेरा प्रिय त्योहार दीपावली है। इसे दीवाली भी कहते हैं। दीपावली दीपों का त्योहार है। यह त्योहार पाँच दिनों तक मनाया जाता है। धन त्रयोदशी, नरक चतुर्दशी, दीपावली, गोवर्धन पूजा और भैयादूज ये पाँच पर्व पाँच दिन मनाए जाते है। अमावस्या की अंधेरी रात जगमग दीपों से जममगाने लगती है। यह दृश्य बहुत ही मनोरम व अद्‌भुत होता है। इस दिन भगवान श्रीराम, माता सीता व भाई लक्ष्मण के साथ चौदह वर्ष का वनवास पूरा करके अयोध्या वापस पधारे थे। इसी कारण लोगों ने खुश होकर अपने घरों के द्‌वार पर भगवान के स्वागत हेतु दीप जलाए थे। तब से यह शुभ दिन दीपावली के रूप में मनाया जाता है। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है। दीपावली की शाम को लोग देवी लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा करते हैं। बच्चे पटाखे छोड़ते हैं। इस दिन लोग अपने परिवार वालों के पास जाकर उनसे मिलते हैं और खुशियाँ बाँटते हैं, एक-दूसरे को मिठाइयाँ बाँटते हैं।

यह त्योहार शांति, भाईचारा व एकता का संदेश देता है। हमें एक-दूसरे के साथ प्रेम से रहना और एक-दूसरे के जीवन में खुशियाँ निर्माण करने का संदेश दीपावली से मिलता है। इसलिए हर्षित होकर मैं कहता हूँ -

''त्योहार है दीपावली का
सुख-समृद्‌धि और खुशहाली का।
बुराई के राक्षस को मन से भगाएँ
हृदय में शांति का दीपक जलाएँ।''

अथवा

(ii) **मेरा प्रिय लेखक**

''कुछ बात सोचता हूँ, शब्दों को जोड़ कर,
एहसास मिल रहे हैं, सबको निचोड़ कर''

इस तरह शब्दों को जोड़ कर तथा भावनाओं को अल्फाजों में निचोड़ कर लेखक एक सुंदर रचना का निर्माण करता है। मैंने अनेक लेखकों की रचनाएँ पढ़ी है। किंतु मेरे प्रिय लेखक तो मुंशी प्रेमचंद ही हैं। उनकी कहानियाँ सरल, स्वाभाविक और मर्मस्पर्शी होती है।

मुंशी प्रेमचंद को कथा-सम्राट कहा गया है। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ और दर्जन भर उपन्यास लिखे हैं।

वे पहले उर्दू में लिखते थे। बाद में वे हिंदी में लिखने लगे। अपनी रचनाओं में उन्होंने देश की दलित, दु:खी और दरिद्र जनता का सजीव वर्णन किया है।

कहते हैं कि मुंशी प्रेमचंद जनता के जिस वर्ग के संपर्क में आते थे, उसे बड़ी बारीकी से देखते थे और उसके सुख-दु:ख से भलीभाँति परिचित हो जाते थे। इसलिए वे जन-जीवन का सफल चित्रण कर सके। वे अपनी सफलता और सादगी से सबके आत्मीय बन जाते थे। यही प्रेमचंद जी की विशेषता थी। इसलिए उनकी रचनाएँ हृदयस्पर्शी बन सकी हैं।

मेरे मन पर प्रेमचंद की निम्नलिखित कहानियों की गहरी छाप है :

'सुजान भगत', 'पूस की रात', 'नमक का दारोगा', 'कफन', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'बड़े घर की बेटी', 'ईदगाह' और 'बोध'।

सरल, बोलचाल की, मुहावरों की मुहावरेदार भाषा में लिखी ये कहानियाँ मन को जकड़ लेती हैं। ये बराबर याद रहती है और इनके पात्र मन में बस जाते हैं।

आजकल जो कहानियाँ पत्र-पत्रिकाआं में छपती है, वे प्राय: जटिल होती हैं। उनमें तरह–तरह के नए-नए विचार मिलते हैं, किंतु ये कहानियाँ हमारे मन पर अपनी छाप नहीं छोड़ पाती। संभव है, हम इन्हें पूरी तरह न समझ पाते हों। शायद इसलिए हम हमेशा मुंशी प्रेमचंद की कहानियों को ही तलाश करते हैं अथवा उसकी पढ़ी हुई कहानियों को ही बार-बार पढ़ना चाहते हैं।

यदि अवसर प्राप्त हुआ तो मैं मुंशी प्रेमचंद की रचनाओं का और अधिक अध्ययन करुँगा।

❖❖❖